आर्थिक भूगोल की प्रमुख शाखाएँ (Important Branches of Economic Geography)

आर्थिक भूगोल के गहन अध्ययन के लिए आर्थिक भूगोल के अन्तर्गत अग्रलिखित 5 शाखाओं को सम्मिलित किया जाता है।

1. **प्राथमिक उद्यमों का भूगोल** (Geography of Primary Occupations)—शिकार करना, लकड़ी काटना, भोजन संग्रह, पशुचारणता, आदिम मत्स्यपालन तथा प्राचीन पद्धति से किया जाने वाला खनन व कृषि व्यवसाय आर्थिक भूगोल की इस शाखा में सम्मिलित प्रमुख व्यवसाय हैं, जिनके वितरण प्रतिरूप का अध्ययन किया जाता है।

2. **कृषि भूगोल** (Agricultural Geography)—आर्थिक भूगोल की इस शाखा में कृषि फसलों के अतिरिक्त व्यावसायिक स्तर पर किया जाने वाला मत्स्यपालन, मुर्गीपालन तथा वन उद्यम सम्मिलित होते हैं।

3. **औद्योगिक भूगोल** (Industrial Geography)—आर्थिक भूगोल की इस शाखा के अन्तर्गत लघु, मध्यम तथा वृहद् स्तर के उद्योगों से जुड़े विभिन्न पक्षों का अध्ययन सम्मिलित होता है।

4. **परिवहन भूगोल** (Geography of Transportation)—मानव द्वारा प्रयुक्त किए जाने वाले परिवहन के विभिन्न साधनों यथा सड़क मार्ग, रेल मार्ग, वायु मार्ग तथा जलमार्गों का स्थानिक दृष्टिकोण से किया जाने वाला अध्ययन इस शाखा में सम्मिलित होता है।

5. **व्यापार व वाणिज्य भूगोल** (Geography of Trade and Commerce)—आर्थिक भूगोल की इस शाखा में मानव द्वारा किए जाने वाले व्यापारिक तथा वाणिज्यिक क्रियाकलापों का स्थानिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाता है।

आर्थिक भूगोल की शाखाएँ

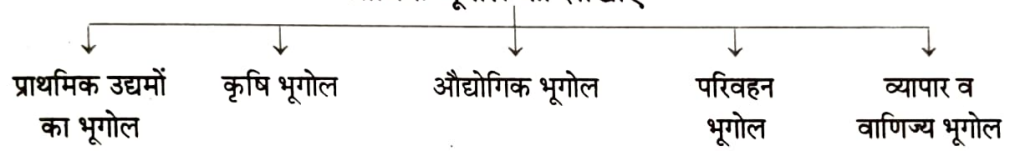

डॉ. जगदीश सिंह व काशीनाथ सिंह के अनुसार आर्थिक भूगोल का विषय क्षेत्र (Scope of Economic Geography According to Dr. J. Singh And K.N. Singh)

डॉ. जगदीश सिंह तथा **काशीनाथ सिंह** के अनुसार, "आर्थिक भूगोल के विषय क्षेत्र में मानव के वे सभी प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक तथा चतुर्थक क्रियाकलाप, जो ठोस रूप से भूसतह पर दृष्टिगोचर होते हैं, सम्मिलित होते हैं। उदाहरण के लिए कृषि, खनन, उद्योग, परिवहन आदि ऐसे आर्थिक कार्य हैं, जो भूसतह पर मूर्तिरूप में दिखाई देते हैं, लेकिन राजस्व व टैक्स प्रणाली आदि ऐसे आर्थिक कार्य जो भूसतह पर दृष्टिगोचर नहीं होते हैं, आर्थिक भूगोल के अध्ययन क्षेत्र में सम्मिलित नहीं होते। वस्तुतः भूसतह पर अपने चिह्न छोड़ने वाले सभी आर्थिक क्रियाकलाप आर्थिक भूगोल का मूलाधार होते हैं।"

डॉ. जगदीश सिंह तथा **काशीनाथ सिंह** ने आर्थिक भूगोल के विषय क्षेत्र को व्यापक बताते हुए उसके अन्तर्गत मानव-वातावरण तन्त्र परिधि में निम्नलिखित 4 पक्षों को सम्मिलित किया है—

1. विभिन्न आर्थिक तत्वों तथा कार्यों का प्रादेशिक स्तर पर मिलने वाला स्थानिक या भूवैन्यासिक संगठन प्रतिरूप।
2. तकनीकी विकास के सन्दर्भ में कार्यात्मक संगठन में समायोजन की प्रक्रिया।
3. अन्तर्प्रादेशिक (Inter-Regional) एवं प्रादेशान्तरिक (Inter-regional) अन्तर्क्रिया।
4. उक्त तीनों का पर्यावरण तथा गुणात्मक जीवन स्तर पर पड़ने वाला दीर्घकालीन प्रभाव।

आर्थिक भूगोल की मौलिक संकल्पनाएँ
(FUNDAMENTAL CONCEPTS OF ECONOMIC GEOGRAPHY)

आर्थिक भूगोल की मौलिक संकल्पनाएँ आर्थिक भूगोल का स्वरूप व्यक्त करती हैं। आर्थिक भूगोल की संकल्पनाएँ परस्पर अन्तर्सम्बन्धित एवं गुम्फित सम्मिश्रण (Complex whole) के रूप में विषय को सर्वांगीण स्वरूप प्रदान करती हैं। आर्थिक भूगोल की संकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं—

(1) **आर्थिक भूदृश्यों की संकल्पना** (The Concept of Economic Landscape)—इसका उद्भव जर्मन शब्द लैण्डशाफ्ट (Landschaft) से हुआ है। यह आर्थिक भूगोल की आधारभूत संकल्पना है।

इससे आर्थिक विशेषताओं अर्थात् प्रादेशिक अर्थतन्त्र संगठन की अभिव्यक्ति होती है। अर्थतन्त्र में विविध पक्षों जैसे—कृषि, उद्योग, उत्खनन, व्यापार आदि से सम्बन्धित विभिन्न तत्वों, वस्तुओं, उपकरणों आदि का समुच्चयिक स्वरूप आर्थिक भूदृश्य में उभरता है, जिससे प्रादेशिक आर्थिक तन्त्र (Regional Economy) की समष्टि का निरूपण होता है।

(2) **आर्थिक भूदृश्य स्थैतिक नहीं वरन् गत्यात्मक है, जिसका निरन्तर परिवर्तन तथा सतत् क्रम विकास होता है** (Economic Landscape is not a static but dynamic element experiencing continuous change and Constant evolution)—आर्थिक भूदृश्य एक ओर मनुष्य के तात्कालिक आर्थिक कार्यों को प्रभावित करता है, तो दूसरी ओर इन कार्यों से प्रभावित होकर स्वयं परिवर्तित भी होता रहता है, जैसे—एक निर्वाहक आर्थिक तन्त्र (Subsistence Economy) प्रधान आर्थिक भूदृश्य में भी क्रमशः औद्योगीकरण के कारण आमूल परिवर्तन होना सम्भव है। इसी संकल्पना के आधार पर वेबर और अन्य विद्वानों ने क्रम विकास उपागम (Evolutionary Approach) को अपनाकर आर्थिक तन्त्र के विभिन्न उद्योगों की स्थापना एवं सामान्य आर्थिक विकास के सिद्धान्त प्रतिपादित किये हैं।

(3) **वर्तमान आर्थिक भूदृश्य संसाधन, संरचना, आर्थिक प्रक्रिया एवं आर्थिक विकास की अवस्था का द्योतक है** (Present economic landscape reflects the resources structure, economic processes and the stage of economic development)—गत्यात्मक आर्थिक भूदृश्य में परिवर्तन आकस्मिक अथवा छुटपुट नहीं होते, प्रत्युत किसी क्रमबद्ध पद्धति से होते हैं। **एस. एच.** बीवर ने आर्थिक भूदृश्य की व्याख्या के लिए संरचना, प्रक्रिया एवं अवस्था (Structure, Processes and Stage) के त्रिसूत्र का सहारा लिया है। संरचना में प्राकृतिक और मानवीय दोनों संसाधन, प्रक्रिया में भूमि एवं संसाधन उपयोग की विधियाँ तथा अर्थतन्त्र के विभिन्न अंग और तत्व सम्मिलित हैं एवं आर्थिक विकास अवस्था के अन्तर्गत किसी भी आर्थिक तन्त्र में संसाधन उपयोग की प्रक्रिया किस हद तक प्रभावशाली हुई है तथा उसके विभिन्न अवयव किस सीमा तक सुसंगठित हैं, दर्शाते हैं।

(4) **आर्थिक क्रियाकलाप की अवस्थिति एवं स्थापन** (Location and Localization of Economic activities)—अर्थतन्त्र के क्षेत्रीय संगठन को समझने के लिए इसके आन्तरिक संघटक तत्वों एवं कार्यों का विश्लेषण अनिवार्य होता है। इस दिशा में सर्वप्रथम तत्व अथवा कार्य विशेष की अवस्थिति एवं स्थापना की विवेचना आवश्यक है, जैसे—भारत में लोहा इस्पात उद्योग की अवस्थिति की विवेचना करनी है, तो केवल कारखाने किन स्थलों पर स्थित हैं, यही नहीं वरन् इस्पात निर्माण से सम्बन्धित तत्वों, जैसे—कच्ची सामग्री, स्रोत, कच्चा लोहा, कोयला, चूना पत्थर, मैंगनीज आदि, श्रम आपूर्ति क्षेत्र, बाजार, परिवहन, जल आपूर्ति आदि तत्वों का भी अध्ययन आवश्यक है। अतएव अवस्थिति निर्धारण में उन सभी तत्वों के क्षेत्रीय अन्तर्सम्बन्ध की विवेचना समाहित है, जिनका कार्य विशेष के उत्पादन, वितरण एवं उपभोग से किस प्रकार का सम्बन्ध है।

(5) **क्षेत्रीय आर्थिक भिन्नताजन्य आर्थिक प्रदेशों की संकल्पना** (The Concept of Economic Regions arising out of areal economic differentiation)—विभिन्न आर्थिक कार्यों के अलग-अलग वितरण प्रतिरूप व आर्थिक भूदृश्य में भिन्नता मिलती है, क्योंकि प्राकृतिक, जैविक एवं सांस्कृतिक प्रक्रियाओं के कारण उनकी परस्पर सम्बद्धता भी भिन्न प्रकार की होती है, जैसे—कृषि उद्योग, उत्खनन, व्यापार, तृतीयक कार्य आदि में प्रत्येक विश्व वितरण प्रतिरूप अलग-अलग होता है। इनकी परस्पर सम्बद्धता भी भिन्न-भिन्न होती है। ये सभी कार्य विश्व में न्यूनाधिक मात्रा में मिलते हैं, परन्तु उनके परस्पर सम्बद्ध स्वरूप में प्रादेशिक भिन्नता हो जाती हैं। अतः आर्थिक तत्व अथवा तत्व समूह पर आधारित होकर कृषि प्रदेश, औद्योगिक प्रदेश आदि का सीमांकन किया जा सकता है। साथ ही साथ क्षेत्रीय सम्बद्धता की समरूपता के आधार पर आर्थिक प्रदेशों का सीमांकन किया जा सकता है। इस प्रकार आर्थिक प्रदेशों के माध्यम से आर्थिक भूदृश्य एवं प्रकारात्मक वर्गीकरण (Typology) करने एवं उनके सम्यक् विवेचन में सहायता मिलती है।

(6) **प्रादेशिक कार्यात्मक अन्योन्यक्रिया** (Spatial Functional Interaction)—आर्थिक प्रदेशों में कार्यात्मक अन्तर्सम्बन्ध होते हैं। क्रम विकास के लिए यह अन्तर्सम्बन्ध अनिवार्य होता है। आधुनिक विशेषीकरण (Specialization) तथा वृहत् पैमाने पर उत्पादन के युग में कोई भी आर्थिक कार्य सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित

करता है तथा वह स्वयं आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक दशाओं द्वारा प्रभावित होता है। कोई भी आर्थिक प्रदेश अन्य प्रदेशों से अलग नहीं रह सकता। वास्तव में किसी प्रदेश विशेष में किसी विशेष प्रकार के उत्पादन के लिए प्रोत्साहन तथा उसको सम्पादित करने के साधन न केवल उसी प्रदेश से प्रत्युत किसी सुदूर प्रदेश से भी प्राप्त हो सकते हैं एवं उत्पादित वस्तु का उपयोग भी उसी प्रकार सुदूर प्रदेशों में हो सकता है आर्थिक विकास का आधार यही प्रादेशिक कार्यात्मक अन्योन्य क्रिया है। प्रादेशिक कार्यात्मक अन्योन्य क्रिया क्षैतिज (Horizontal) तथा लम्बवंत् (Vertical) दोनों प्रकार की होती है। एक ही पदानुक्रम (Hierarchy) स्तर के विभिन्न आर्थिक प्रदेशों में अन्योन्य क्रिया होती है।

(7) **क्षेत्रीय कार्यात्मक संगठन** (Spatial Functional Organization)—विभिन्न आर्थिक प्रदेश क्षेत्रीय कार्यात्मक संगठन द्वारा परस्पर सम्बद्ध होकर आर्थिक भूदृश्य का स्वरूप ग्रहण करते हैं। संगाम (Uniform) तथा संकेन्द्रीय (Nodal)—आर्थिक प्रदेशों के परस्पर सम्बद्ध होने से क्षेत्रीय कार्यात्मक संगठन पैदा होता है।

प्रश्न (QUESTIONS)

...रीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

... क्षेत्र का वर्णन कीजिए।

... its scope.